7

पवित्र आत्मा और अन्य भाषाएं

यीशु से प्रेम करने वालों द्वारा आज अन्य भाषा बोलने के बारे में प्रश्न पूछे जा रहे हैं। अन्य भाषाओं का दान है *क्या*? पहली शताब्दी की कलीसिया में यह दान मसीही लोगों को *कैसे* मिलता था? परमेश्वर ने ऐसा दान *क्यों* दिया? क्या आज *हर मसीही* को इस दान की इच्छा करनी चाहिए? क्या यह हो सकता है कि कोई *परमेश्वर की सच्ची संतान* हो पर अन्य भाषा न बोले। आइए इस और अन्य भाषा बोलने के अन्य प्रश्नों पर नये नियम की शिक्षा को समझने का गम्भीर प्रयास करते हैं।

अध्ययन आरम्भ करने से पहले, एक चेतावनी को ध्यान में रखना आवश्यक है। अन्य भाषा बोलने के विषय का इतना भावनात्मक महत्व है कि कुछ लोगों को इसके अपने अध्ययन में निष्पक्ष होना कठिन लगता है। यह बात उन प्रचारकों के लिए विशेष रूप से सही हो सकती है, जो लोगों को ऐसे बुलवाकर अपनी रोजी-रोटी चलाते हैं, परन्तु यदि हम पूरे मन और सच्चाई से प्रेम रखते हैं, तो हम ईमानदारी से पूछेंगे कि ''इस विषय पर *बाइबल* क्या सिखाती है?'' और अपने प्रश्नों के लिए परमेश्वर के उत्तरों को जानने के लिए नये नियम की शिक्षाओं की सावधानीपूर्वक समीक्षा करेंगे। पौलुस ने चेतावनी दी है कि जो लोग सच्चाई से प्रेम नहीं रख पाते, वे ''एक भटका देने वाली सामर्थ'' से ''झूठ की प्रतीति'' करेंगे, ताकि ''जितने लोग सत्य की प्रतीति नहीं करते, वरन अधर्म से प्रसन्न होते हैं, सब दण्ड पाएं'' (2 थिस्सलुनीकियों 2:11, 12)।

प्रचारक इस विषय पर जो भी सिखाते हैं, वे उसके लिए परमेश्वर के प्रति जवाबदेह हैं, और वे लोग भी जो विश्वास करते और मानते हैं, उसके लिए जवाबदेह हैं। यदि आधुनिक अन्य भाषा बोलने की बात को पवित्र आत्मा से माना जाए, तो परमेश्वर के हर बालक को इस दान की इच्छा करनी आवश्यक है। दूसरी ओर, यदि यह कार्य नकली है अर्थात शैतान का काम है, तो इस झूठ को लोगों के सामने लाया जाना चाहिए, और इस लहर का ज़ोरदार विरोध होना आवश्यक है! इस गम्भीर चेतावनी को ध्यान में रखते हुए, आइए प्रार्थनापूर्वक अन्य भाषा बोलने के बारे में परमेश्वर के वचन में से देखें। परमेश्वर हमारे इस अध्ययन में हमें आशीष दे।

कुछ लोगों को यह जानकर धक्का लग सकता है कि अन्य भाषा के विषय पर नये

नियम की केवल तीन पुस्तकों मरकुस, प्रेरितों के काम और 1 कुरिन्थियों में ही बताया गया है। यीशु ने अपने प्रेरितों के साथ व्यक्तिगत भेंट में मरकुस रचित सुसमाचार की अन्तिम आयतों में इस विषय पर पहली बार बात की थी। कृपया ''चेला'' और ''प्रेरित'' में अन्तर पर ध्यान दें। चेले का अर्थ सीखने वाला होता है, इसलिए यीशु की शिक्षाओं को सीखने वाले *सभी* लोग चेले हैं, जिनमें प्रेरित भी शामिल हो सकते हैं। परन्तु प्रेरित वे विशेष चेले थे, जिन्हें यीशु ने प्रचार करने और दुष्टात्माओं को निकालने का अधिकार दिया था (मरकुस 3:14, 15)। पिन्तेकुस्त के बाद और प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा मिलने के बाद (प्रेरितों 2) उन्हें मसीह के बाद कलीसिया में सबसे बड़ा अधिकार दिया गया था (इफिसियों 1:22; 2:20)।

बाइबल में अन्य भाषाएं

मरकुस रचित सुसमाचार में

स्वर्ग में उठाए जाने से पहले, यीशु ने अपने ''चुने हुए ग्यारह'' (यहूदा को निकालकर) से मिलकर उन्हें मरकुस 16:15-18 में आज्ञा दी:

> तुम सारे जगत में जाकर सारी सृष्टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो। जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा, परन्तु जो विश्वास न करेगा वह दोषी ठहराया जाएगा। और विश्वास करने वालों में ये चिह्न होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्टात्माओं को निकालेंगे। नई-नई भाषाएं बोलेंगे, सांपों को उठा लेंगे, और यदि वे नाशक वस्तु भी पी जाएं तौ भी उन की कुछ हानि न होगी, वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएंगे।

''नई-नई भाषा बोलना'' उन पांच चिह्नों में से एक था, जिनकी प्रतिज्ञा यीशु ने की थी कि उस पर विश्वास करने वालों के साथ-साथ होंगे। आज अन्य भाषा बोलने का दावा करने वाले लोग अपने कार्य के लिए वचन के अधिकार के रूप में इसी आयत को दिखाते हैं। वे तर्क देते हैं कि ''नई-नई भाषा'' विश्वास करने वाले के साथ-साथ होनी थी; इसलिए ''यदि कोई विश्वासी है, तो वह अन्य भाषा बोल सकता है।'' इससे एक प्रश्न खड़ा होता है कि ''क्या मरकुस 16 में यीशु ने यह प्रतिज्ञा की कि *उसमें विश्वास करने वाले सब* लोग अन्य भाषाओं में बोलेंगे?'' 1 कुरिन्थियों 12:30 में पौलुस ने पूछा, ''क्या सब नाना प्रकार की भाषा बोलते हैं?'' पौलुस का अलंकारिक प्रश्न इस स्पष्ट उत्तर की मांग करता है कि ''नहीं।'' यीशु ने कभी यह प्रतिज्ञा नहीं की कि *सभी विश्वासी* अन्य भाषाओं में बोलेंगे, जिस कारण उद्धार पाने के प्रमाण के रूप में अन्य भाषा बोलने का दावा करना परमेश्वर की प्रेरणा पाए प्रेरित पौलुस के लेखों का विरोधाभास है!

पिछले पाठ ''प्रेरितों 1-8 में आत्मा'' में हमने देखा था कि मरकुस 16 में बताए गए एकमात्र विश्वासी जो चिह्न दिखा सकते थे, केवल प्रेरित और वे लोग थे, जिन पर प्रेरितों ने हाथ रखे थे। प्रेरिताई का कार्यालय स्थाई कार्यालय नहीं था, इसलिए प्रेरितों के हाथ रखने

से दिए जाने वाले आश्चर्यकर्म के दान भी अस्थाई अर्थात थोड़ी देर तक रहने वाले थे।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में अन्य भाषाएं

मरकुस 16:17 में बताए गए एक चिह्न, ''नई-नई भाषा'' से अविश्वासी लोग पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया के आरम्भ में प्रेरितों को सुनने के लिए कायल हो गए। बाद में, अन्य भाषाओं से प्रेरितों में इस बात की पुष्टि हुई कि अन्यजातियों के लोग भी मसीह की कलीसिया में शामिल हो सकते हैं। इन अवसरों का वर्णन प्रेरितों 2 और 10 अध्यायों में किया गया है।

प्रेरितों 2 के अनुसार, मरकुस 16:17 में दी गई प्रतिज्ञा को पूरा करते हुए, प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा दिए जाने के बाद, पिन्तेकुस्त के दिन वे अन्य भाषाएं बोलने लगे थे। ये भाषाएं समझ आने वाली विदेशी भाषाएं थीं, जिन्हें ''आकाश के नीचे'' के हर देश के रहने वाले यहूदी अच्छी तरह समझते थे (प्रेरितों 2:5, 6)। इस आश्चर्यकर्म से लोग चकित हो गए और उन्होंने पूछा, ''तो फिर क्यों हम में से हर एक अपनी-अपनी जन्म भूमि की भाषा सुनता है? ... परन्तु अपनी-अपनी भाषा में उनसे परमेश्वर के बड़े-बड़े कामों की चर्चा सुनते हैं'' (प्रेरितों 2:8, 11)। ध्यान दें कि इन आयतों में, ''भाषा'' शब्द का इस्तेमाल किया गया है। 1 कुरिन्थियों 14:10, 13 में पौलुस ने इसी का समानार्थक शब्द इस्तेमाल किया।

क्योंकि पिन्तेकुस्त के दिन दी गई अन्य भाषाएं समझ आ सकने वाली विदेशी भाषाएं थीं, इसलिए उन्होंने यहूदी लोगों में जो उस समय विश्वास नहीं करते थे कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है, एक चिह्न के रूप में काम किया। बाद में पौलुस ने लिखा, ''इसलिए अन्य भाषाएं विश्वासियों के लिए नहीं, परन्तु अविश्वासियों के लिए चिह्न हैं, ... '' (1 कुरिन्थियों 14:22)। प्रेरितों द्वारा पवित्र आत्मा के यहूदी लोगों की स्थानीय भाषाओं में बात करने से, परमेश्वर ने एक विशेष चिह्न दिखाया और यशायाह की भविष्यवाणी पूरी की कि ''मैं अन्य भाषा बोलने वालों के द्वारा और पराए मुख के द्वारा इन लोगों से बातें करूंगा ...'' (1 कुरिन्थियों 14:21)। कोई भी जो आज अन्य भाषा में बोलने का दावा करता है, उसे चाहिए कि वह पिन्तेकुस्त के दिन प्रेरितों द्वारा बोली गई भाषाओं की तरह स्पष्ट विदेशी भाषा में *बोले,* जिसे उसने कभी सीखा न हो। उन्हें स्थानीय लोगों की भाषा में भी बोलना चाहिए, जिन्हें पता हो कि वे जो सुन रहे हैं, वह परमेश्वर की ओर से आश्चर्यकर्म ही हो सकता है! इससे कम उन लोगों (लेखक समेत) के लिए चिह्न *नहीं* होगा जो यह नहीं मानते कि आज कलीसिया में ऐसा दान दिया जाता है।

प्रेरितों के काम में अन्य भाषा बोलने का एक और उल्लेख अध्याय 10 और 11 में कुरनेलियुस और उसके परिवार के बारे में है। इन अन्यजातियों में पतरस के वचन सुनाते ही, ''पवित्र आत्मा वचन के सब सुनने वालों पर उतर आया।'' वे ''भांति-भांति की भाषा बोलने और परमेश्वर की बड़ाई करने'' (प्रेरितों 10:44, 46) लगे। याद रखें कि अन्य भाषाएं अविश्वासियों के लिए चिह्न थीं। पतरस और उसके यहूदी भाई यह विश्वास नहीं करते थे कि अन्यजाति लोग मसीही बन सकते हैं। उन्हें विश्वास दिलाने के लिए कि अन्यजातियों के उद्धार की इच्छा स्वयं परमेश्वर की है और यह उसने कुरनेलियुस और

उसके परिवार को अन्य भाषा का दान देकर दिखाया। जब कुरनेलियुस और उसके परिवार के लोग अन्य भाषा में बोलने लगे तो पतरस ने पूछा, ''क्या कोई जल को रोक सकता है, कि ये बपतिस्मा न पाएं, जिन्होंने हमारी नाईं पवित्र आत्मा पाया है?'' (प्रेरितों 10:47)। परमेश्वर की ओर से अन्य भाषाओं के आश्चर्यकर्म के दान के द्वारा, पतरस और उसके यहूदी साथियों को विश्वास हो गया कि अन्यजातियों को उसके अनन्त परिवार में ग्रहण करने की इच्छा स्वयं परमेश्वर की थी।

बाद में, यरूशलेम की कलीसिया को यह घटना बताते हुए पतरस ने कहा कि कुरनेलियुस के घर हुई घटना ने उसे अपने प्रेरितों को दी गई, यीशु की प्रतिज्ञा याद दिला दी कि ''यूहन्ना ने तो पानी से बपतिस्मा दिया, परन्तु तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे'' (प्रेरितों 11:16)। पतरस ने कुरनेलियुस के अनुभव को उस एकमात्र घटना से मिलाया, जो उसने कभी देखी थी कि प्रेरितों 10 अध्याय की घटनाएं पिन्तेकुस्त के साथ मेल खाती थीं। पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के द्वारा प्रेरितों को सीधे परमेश्वर की ओर से अन्य भाषा बोलने का दान मिला था। कुरनेलियुस और उसके परिवार को उसी तरह (सीधे स्वर्ग से, बिना किसी मनुष्य के हस्तक्षेप के) ''वही दान'' मिला था (प्रेरितों 11:17)। यह जानते हुए कि पिन्तेकुस्त के दिन की घटनाओं के पीछे परमेश्वर का अधिकार था, पतरस ने पूछा, ''तो मैं कौन था जो परमेश्वर को रोक सकता?'' जब यहूदी मसीहियों ने पतरस की कहानी सुनी, तो ''वे चुप रहे, और परमेश्वर की बड़ाई करके कहने लगे, तब तो परमेश्वर ने अन्यजातियों को भी जीवन के लिए मन फिराव का दान दिया है'' (प्रेरितों 11:18)। कुरनेलियुस को अन्य भाषाओं का परमेश्वर का दान वही प्रमाण था, जो पतरस और यहूदी भाइयों को यह विश्वास दिलाने के लिए आवश्यक था कि परमेश्वर ने ''विश्वास के द्वारा उन के मन शुद्ध करके हम में और उन में कुछ भेद न रखा'' (प्रेरितों 15:9)।

कुरनेलियुस और उसके परिवार के मनपरिवर्तन के आस-पास की घटनाओं से योएल की भविष्यवाणी पूरी हो गई कि परमेश्वर ने ''अपना आत्मा *सब मनुष्यों* पर उण्डेलना'' था (प्रेरितों 2:17; तुलना योएल 2:28)। प्रेरितों को पवित्र आत्मा का बपतिस्मा यहूदियों के प्रतिनिधियों के रूप में दिया गया था। कुरनेलियुस और उसके परिवार को एक विशेष अर्थात अन्यजातियों के रूप में उन पर आत्मा के आश्चर्यकर्म से उण्डेले जाने के द्वारा अन्य भाषा बोलने का दान देकर दिया गया था। इन दो विलक्षण आश्चर्यकर्मों के उद्देश्य की समझ आने पर, हमें यह भी समझ आता है कि ऐसे आश्चर्यकर्म फिर दोबारा क्यों नहीं हुए। आज जो लोग पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाने के लिए परमेश्वर से गुहार लगा रहे हैं, वे उसे वह प्रतिज्ञा पूरी करने के लिए कह रहे हैं, जिसे वह पहले ही पूरा कर चुका है!

अन्य भाषाओं का दान देने का एक और हवाला प्रेरितों के काम में अध्याय 19 में मिलता है। पौलुस को कुछ इफिसी लोग मिले और उन में यह बातचीत हुई:

> उनसे कहा; क्या तुमने विश्वास करते समय पवित्र आत्मा पाया? उन्होंने उससे कहा, हम ने तो पवित्र आत्मा की चर्चा भी नहीं सुनी। उसने उनसे कहा; तो फिर तुम ने किस का बपतिस्मा लिया? उन्होंने कहा; यूहन्ना का बपतिस्मा। पौलुस ने कहा; यूहन्ना ने

> यह कहकर मन फिराव का बपतिस्मा दिया, कि जो मेरे बाद आने वाला है, उस पर अर्थात यीशु पर विश्वास करना। यह सुनकर उन्होंने प्रभु यीशु के नाम का बपतिस्मा लिया। और जब पौलुस ने उन पर हाथ रखे, तो उन पर पवित्र आत्मा उतरा, और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे (आयतें 2-6)।

पौलुस ने इन चेलों से पूछा कि क्या उन्हें पवित्र आत्मा मिला था। जब उन्होंने बताया कि नहीं, तो पौलुस ने तुरन्त उनके बपतिस्मों पर सवाल उठाया, क्योंकि यीशु के अधिकार से दिए गए पानी के बपतिस्मे में पवित्र आत्मा के दान की प्रतिज्ञा भी थी (प्रेरितों 2:38)। जब इन लोगों को यह पता चला, तो उन्होंने बपतिस्मा लिया। पौलुस ने फिर उन पर हाथ रखे, और ''*उन पर* पवित्र आत्मा उतरा और वे भिन्न-भिन्न भाषा बोलने और भविष्यवाणी करने लगे'' (प्रेरितों 19:6)। पहले पानी का बपतिस्मा हुआ और फिर पवित्र आत्मा का दान मिला। फिर, एक प्रेरित के हाथ रखने से, पवित्र आत्मा ने आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ दी।

1 कुरिन्थियों में अन्य भाषाएं

हमने मरकुस रचित सुसमाचार और प्रेरितों के काम की पुस्तक से अन्य भाषाओं पर नये नियम का प्रमाण देखा है। अन्य भाषाओं का उल्लेख करती अन्तिम पुस्तक 1 कुरिन्थियों है। इस पत्री में पौलुस ने अन्य भाषा बोलने को ''अन्य भाषा का अर्थ बताने'' के साथ नौ दानों में से एक बताया है (1 कुरिन्थियों 12:8-10)। अन्य भाषाओं का अर्थ बताने के दान में आश्चर्यकर्म से अन्य भाषा के वक्ता की विदेशी भाषा का अनुवाद करने की योग्यता शामिल थी। अन्य भाषा और अन्य भाषा का अर्थ दोनों ही आश्चर्यकर्म के द्वारा थे, अर्थात परमेश्वर की प्रेरणा से दी गई विदेशी भाषा का ज्ञान वक्ता या व्याख्याकार को बिना सीखे मिलता था।

पवित्र आत्मा के आश्चर्यकर्म के नौ दानों में से एक और दान ''भविष्यवाणी'' का था (1 कुरिन्थियों 12:10)। भविष्यवाणी ''पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से'' (2 पतरस 1:21) बोलने की योग्यता थी। भविष्यवाणी का यह दान पाए हुए लोगों को ''भविष्यवक्ता'' (तुलना 1 कुरिन्थियों 12:28) के रूप में जाना जाता था। ''मसीह का भेद'' आश्चर्यकर्म के द्वारा ''उसके पवित्र प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं पर प्रकट किया गया'' था (इफिसियों 3:4, 5)। परमेश्वर की प्रेरणा प्राप्त इन दो पदों के द्वारा, प्रभु का वचन सच्चाई की नींव के रूप में दिया गया, जिस पर प्रभु की कलीसिया बनी है, ''जिसके कोने का पत्थर मसीह यीशु स्वयं ही है'' (इफिसियों 2:20)।

''प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं'' को *अधिकारात्मक पद* मिले थे, जिनमें पवित्र आत्मा की प्रेरणा और आश्चर्यकर्म के दान शामिल थे। आज किसी व्यक्ति में प्रेरित होने की योग्यताएं नहीं हो सकतीं, क्योंकि आश्चर्यकर्म के दान आगे देने के लिए मसीही लोगों पर हाथ रखने के लिए कोई प्रेरित नहीं है। हमें आज अन्य भाषा बोलने के ''परमेश्वर की ओर से'' होने के प्रश्न पर गम्भीरतापूर्वक विचार करना चाहिए! पौलुस ने सभी मसीहियों को गम्भीर चेतावनी दी है कि ''शैतान के कार्य'' में ''सब प्रकार की झूठी सामर्थ और चिह्न और *अद्‌भुत काम*'' शामिल हैं (2 थिस्सलुनीकियों 2:9)। क्या शैतान आज हमारे संसार

में, यीशु के पवित्र नाम से नकली आश्चर्यकर्म और अन्य भाषाएं बोलने का काम कर रहा है, जैसा कि यीशु ने कहा था कि वह करेगा? (तुलना मत्ती 7:22, 23)।

यदि आज भी कलीसिया को अन्य भाषाएं और अन्य भाषाओं के अर्थ दिए जाते हैं, तो सात अन्य (भविष्यवाणी के दान समेत) *भी मिलने चाहिए*। यदि आज भविष्यवाणी होती, तो इसका यह अर्थ होना था कि परमेश्वर मनुष्य जाति के लिए अपनी प्रेरणा से अभी भी सच्चाई प्रकट कर रहा है। ऐसा नहीं हो सकता, क्योंकि यीशु ने *अपने प्रेरितों* से प्रतिज्ञा की कि पवित्र आत्मा ने *उन्हें सब* सत्य में अगुआई करनी थी (यूहन्ना 16:13)। प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा विश्वास ''पवित्र लोगों को एक ही बार सौंपा गया'' है (यहूदा 3)। परमेश्वर के वचन की जो पहली शताब्दी में स्वर्ग से आश्चर्यकर्म के द्वारा प्रकट किया गया था, स्वयं परमेश्वर द्वारा उन चिह्नों के साथ पुष्टि की गई थी, जो साथ-साथ होते थे। आज हमारे पास परमेश्वर का सम्पूर्ण, लिखित वचन है और हमें चाहिए कि ''हर एक भले काम के लिए तत्पर'' होने के लिए केवल इसी पर भरोसा रखें (2 तीमुथियुस 3:17)। किसी अतिरिक्त प्रकाशन या आश्चर्यकर्म के चिह्नों की आवश्यकता नहीं है! विश्वास मसीह का वचन सुनने से आता है (रोमियों 10:17), और हमें ''रूप को देखकर नहीं पर विश्वास से'' चलने की आज्ञा दी गई है (2 कुरिन्थियों 5:7)।

आज की अन्य भाषाएं

स्पष्टतया कुछ लोग अपने वचन में विश्वास के द्वारा चलने के परमेश्वर के प्रबन्ध से सन्तुष्ट नहीं हैं। वे इस बात के प्रमाण के रूप में कि परमेश्वर उनके साथ है और वे उद्धार पाए हुए हैं, चिह्न और व्यक्तिगत भावनात्मक अनुभव गढ़ लेते हैं। हमें यीशु की शिक्षा याद है कि ''इस युग के बुरे और व्यभिचारी लोग चिह्न ढूंढ़ते हैं'' (मत्ती 12:39)।

प्रार्थना की भाषाओं की इच्छा करना

विशेष चिह्नों की अपनी तलाश में, कुछ लोग यह दावा करते हैं कि परमेश्वर ने उन्हें ''प्रार्थना की भाषाएं'' दी हैं, जिनके द्वारा वे आत्मा में परमेश्वर से प्रार्थना कर सकते हैं। नये नियम में हमें कहीं पढ़ने को नहीं मिलता कि किसी के व्यक्तिगत सुधार के लिए ''प्रार्थना की भाषा'' दी गई हो। यह सही है कि ''जो अन्य भाषा में बातें करता है वह अपनी ही उन्नति करता है'' (1 कुरिन्थियों 14:4), परन्तु पौलुस ने इस बात पर अफ़सोस जताया कि अन्य भाषा में प्रार्थना करने में ''बुद्धि काम नहीं देती'' (1 कुरिन्थियों 14:14), और इससे कलीसिया का सुधार नहीं होता। उसने समझाया कि अन्य भाषा बोलने वाले को प्रार्थना करनी चाहिए कि वह इसका अर्थ भी कर सके ताकि ''कलीसिया की उन्नति'' हो (1 कुरिन्थियों 14:5)। उसने मसीही लोगों को ऐसा प्रयत्न करने के लिए भी कहा, जिससे ''तुम्हारे वरदानों की उन्नति से कलीसिया की उन्नति हो'' (1 कुरिन्थियों 14:12)। जो मसीही देह के सुधार के बजाय व्यक्तिगत सुधार पर ज़ोर देते हैं, वे वहां ज़ोर देने में नाकाम रहते हैं, जहां प्रभु चाहता है कि दिया जाना चाहिए!

बुद्धि को चुप कराना

परमेश्वर से सीधे संवाद पाने के प्रयास में बुद्धि को नज़रअन्दाज़ करने या समझ को चुप कराने की कोशिश का आत्मिक खतरा एक गम्भीर चेतावनी माना जाना चाहिए। कुछ झूठे शिक्षक दावा करते हैं कि परमेश्वर के आत्मा के काम करने के साथ बुद्धि और समझ को बीच में नहीं आना चाहिए। यह विचार पौलुस के उलट है, जिसने 1 कुरिन्थियों 14 में लिखा है, ''मैं आत्मा से भी प्रार्थना करूंगा और बुद्धि से भी प्रार्थना करूंगा'' (आयत 15)। उसने भाइयों को अपनी सोच में प्रौढ़ बनने के लिए कहा (आयत 20) और ऐलान किया कि ''अन्य भाषा में दस हज़ार बातें कहने से यह [उसे] और भी अच्छा जान पड़ता है कि औरों के सिखाने के लिए बुद्धि पांच ही बातें'' कहे (आयत 19)। ये ताड़नाएं हमें यह निष्कर्ष निकालने पर विवश करती हैं कि यदि पौलुस आज की किसी साम्प्रदायिक कलीसिया में चला जाए और पाए कि जो कुछ ''यीशु के नाम में'' किया जा रहा है, वह उसकी स्पष्ट शिक्षाओं, जिसे *हम जानते हैं* कि पवित्र आत्मा की ओर से है, के विपरीत है।

यदि प्रार्थना करते समय किसी की बुद्धि उसमें नहीं है तो हमें कैसे पता चल सकता है कि वह प्रभु की महिमा ही कर रहा है? वह कैसे कह सकता है कि शैतान का नहीं, बल्कि परमेश्वर का आत्मा उसे प्रार्थना में अगुआई कर रहा है? याद रखें कि दुष्टात्मा भी विश्वास करते (याकूब 2:19), प्रार्थना करते (मत्ती 8:31), और यीशु का नाम पुकारते हैं (प्रेरितों 19:13-17)। जैसा कि हमने पहले ही देखा है, न्याय के दिन बहुत से लोग जिन्हें लगता था कि उन में यीशु की सामर्थ और अधिकार हैं, पाएंगे कि वे धोखे में थे (मत्ती 7:22, 23)। *कृपया* इस भविष्यवाणी को अपने ऊपर पूरा न होने दें!

काल्पनिक अनुभवों पर भरोसा करना

किसी भी भावनात्मक अनुभव पर परमेश्वर के साथ विशेष सम्बन्ध की पुष्टि के रूप में भरोसा करना खतरनाक है। ऐसा आत्म केन्द्रित परिप्रेक्ष्य घमण्ड और विचार की अपरिपक्वता के कारण होता है। यह आत्मा को खुले में शैतान के सामने छोड़ देता है, जो हमें अपनी उपस्थिति से भरने को और अधिक तैयार रहता है। शैतान यीशु का नाम या किसी भी दूसरे हथियार का इस्तेमाल हमारे मनों को धोखा देने और परमेश्वर की सच्चाई के प्रकाश से अपने झूठ के अंधकार में ले जाने के लिए करेगा। यह जानना भयभीत करने वाला है कि शैतान की हमारे मनों और भावनाओं पर पकड़ है और अपने दुष्ट उद्देश्यों के लिए हमें ''अच्छा महसूस'' करवा सकता है या ''धर्मी महसूस'' करवा सकता है। शैतान के धोखा देने वाले झूठों और हमारे प्राणों पर उसके दुष्ट आक्रमणों से बचाव तभी हो सकता है, यदि हम परमेश्वर के वचन पर भरोसा रखें।

स्वर्गदूतों की भाषाएं बोलने का दावा करना

कोई तर्क दे सकता है, ''परमेश्वर ने मुझे स्वर्गदूतों की भाषा दी है और कोई मनुष्य इसका अर्थ नहीं कर सकता।'' बाइबल में किसी स्वर्गदूत ने किसी भी पुरुष या स्त्री से

उसकी स्थानीय भाषा से अलग कौन सी भाषा कहां बोली है ? हमारे परमेश्वर और उसकी स्वर्गीय सेना को स्वर्ग की हो या पृथ्वी की, हर भाषा मालूम है ! यह भी याद रखें कि पौलुस ने आज्ञा दी है कि मण्डली में अन्य भाषाएं बोले जाने पर उनका अर्थ होना आवश्यक है (1 कुरिन्थियों 14:27), उसका यह विश्वास नहीं था कि कलीसिया में हर कोई वह भाषा बोल सकता है, जिसका कोई अर्थ न हो सकता हो !

किसी घटिया दान को ऊंचा उठाना

पौलुस ने अन्य भाषा बोलने के दान को कलीसिया में सर्वोत्तम दान के रूप में ऊंचा नहीं उठाया, बल्कि उसने इसके विपरीत ही किया। अन्य भाषाओं और अन्य भाषाओं के अर्थ को आत्मिक दानों की उसकी सूची में सबसे पीछे रखा गया (तुलना 1 कुरिन्थियों 12:8-10, 28-30)। पौलुस ने यह भी लिखा, ''... भविष्यवाणी करने वाला [अन्य भाषा बोलने वाले] से बढ़कर है'' (1 कुरिन्थियों 14:5), और उसने धन्यवाद किया कि वह सभी कुरिन्थियों में से सबसे अधिक अन्य भाषा बोलता था (1 कुरिन्थियों 14:18)। इसका अर्थ यह नहीं है कि पौलुस ने अन्य भाषा बोलने में *अधिक समय लगाया,* बल्कि यह है कि वह किसी भी दूसरे से *अधिक भाषाएं* बोलता था। पौलुस के तर्कों से कुरिन्थियों को विनम्र करने वाला प्रभाव पड़ा होना चाहिए, जो अपने दिखावटी दानों पर, विशेषकर अन्य भाषाओं के दानों पर इतना इतराते थे !

आज की अन्य भाषाएं बनाम बाइबल के समय की अन्य भाषाएं

अन्य भाषा बोलने के बारे में जो कुछ हम बाइबल में पढ़ते हैं, वह आज के धार्मिक जगत में पाई जाने वाली अन्य भाषाओं से भिन्न है। मसीही लोगों के लिए इन अंतरों को जानना आवश्यक है ताकि हम झूठी शिक्षा को पहचानकर उसका इनकार करने के योग्य हो सकें। इसी को ध्यान में रखते हुए, आइए कुछ महत्वपूर्ण प्रश्नों पर विचार करते हैं।

नये नियम में हमें अन्य भाषाएं बोलने पर
इतना कम ज़ोर क्यों मिलता है ?

यदि अन्य भाषाएं मसीही लोगों के लिए आज इतनी ही आवश्यक हैं, तो सुसमाचार के लेखक ने अपने लेखों में इनमें से किसी का उल्लेख क्यों नहीं किया (मरकुस 16:17 के अपवाद के साथ) ? लूका ने प्रेरितों के काम की पुस्तक में केवल तीन बार अन्य भाषाओं का उल्लेख क्यों किया ? पौलुस ने 1 कुरिन्थियों में इस दान को सूची में पीछे क्यों लिखा और 2 कुरिन्थियों में या रोम, गलातिया, इफिसुस, फिलिप्पी, कुलुस्से या थिस्सलुनीके में मसीही लोगों के नाम अपनी किसी पत्री में इसका उल्लेख क्यों नहीं किया ? यदि अन्य भाषा बोलना वास्तव में मसीह में उद्धार का प्रमाण होता, तो क्या पौलुस तीमुथियुस, तीतुस और फिलेमोन नामक अपने व्यक्तिगत मित्रों के नाम लिखते हुए इस विषय पर बात न करता। याकूब और पतरस ने अपनी पत्रियों में इब्रानियों की पत्री के लेखक की तरह इस

विषय पर बात क्यों नहीं की? नये आश्चर्यकर्म से परमेश्वर की प्रेरणा और आत्मा की अगुआई पाए नये नियम के लेखकों ने इस विषय की लगभग उपेक्षा क्यों की?

आज अन्य भाषाओं पर इतना ज़ोर क्यों दिया जाता है?

परमेश्वर की प्रेरणा पाए लेखकों की स्पष्ट चुप्पी के विपरीत, आज बहुत से प्रचारक अन्य भाषाओं की बात किए बिना धर्म की बात ही नहीं कर सकते। कुछ कलीसियाएं अन्य भाषा बोलने की योग्यता को संगति की परीक्षा बनाने की कोशिश करती हैं, चाहे पौलुस ने लिखा है कि सब मसीही हर समय अन्य भाषा नहीं बोल सकते (1 कुरिन्थियों 12:30)। कुछ लोग ज़ोर देते हैं कि जब तक व्यक्ति अन्य भाषा में नहीं बोलता, तब तक वह आत्मिक रूप में परमेश्वर की परिपक्व संतान नहीं हो सकता। क्या यीशु की यही शिक्षा थी? क्या नये नियम का इसी पर ज़ोर है, या यह हो सकता है कि अन्य भाषाएं परमेश्वर के लिए कभी महत्वपूर्ण नहीं थीं, जितनी आज के कुछ धार्मिक अगुओं के लिए हैं? क्या यह हो सकता है कि आज की अन्य भाषाएं दुष्टात्मा की प्रेरणा से दी गई हैं, जो ''आप ही ज्योतिर्मय स्वर्गदूत का रूप धारण करता है'' (2 कुरिन्थियों 11:14)? आपको इन प्रश्नों का और एक दिन जो कुछ आप करते हैं, उसका उत्तर देना होगा। यीशु ने चेतावनी दी, ''जो वचन मैं ने कहा है, वही पिछले दिन में उसे दोषी ठहराएगा'' (यूहन्ना 12:48)। उसने यह भी कहा, ''उस दिन बहुतेरे मुझ से कहेंगे, हे प्रभु, हे प्रभु, क्या हम ने तेरे नाम से भविष्यवाणी नहीं की, और तेरे नाम से दुष्टात्माओं को नहीं निकाला और तेरे नाम से बहुत अचम्भे के काम नहीं किए? तब मैं उन से खुलकर कह दूंगा कि मैंने तुम को कभी नहीं जाना। हे कुकर्म करने वालो, मेरे पास से चले जाओ'' (मत्ती 7:22, 23)।

कुछ लोग अन्य भाषाओं के सम्बन्ध में
पौलुस की आज्ञाओं की अनदेखी क्यों करते हैं?

आज अन्य भाषाएं बोलने का दान पाने का दावा करने वाली कई कलीसियाएं इस दान के इस्तेमाल के लिए पौलुस के निर्देशों की उपेक्षा करती हैं। पौलुस ने लिखा है, ''यदि अन्य भाषा में बातें करनी हों, तो दो-दो या बहुत हो तो तीन-तीन जन बारी-बारी बोलें, और एक व्यक्ति अनुवाद करे। परन्तु यदि अनुवाद करने वाला न हो, तो अन्य भाषा बोलने वाला कलीसिया में शांत रहे और अपने मन से, और परमेश्वर से बातें करे'' (1 कुरिन्थियों 14:27, 28)। पौलुस ने निष्कर्ष निकाला, ''पर सारी बातें शालीनता और व्यवस्थित रूप से की जाएं'' (आयत 40)। आज कुछ लोग अपनी सभाओं में कुछ समय ठहरा देते हैं और अन्य भाषाएं बोलने की इच्छा रखने वालों को बोलने के लिए प्रोत्साहित करते हैं। एक-दूसरे से बढ़कर बोलने की कोशिश करते हुए सभा में ज़ोर-ज़ोर की आवाज़ें सुनाई देती हैं। भावनाओं के उफ़ान पर आने पर बिल्कुल ही गड़बड़ी का माहौल होता है, और यह इस तथ्य के बावजूद है कि बाइबल स्पष्ट कहती है, ''क्योंकि परमेश्वर गड़बड़ी का नहीं, परन्तु शांति का कर्ता है; जैसा पवित्र लोगों की सब कलीसियाओं में है'' (1 कुरिन्थियों

14:33)। ऐसी गड़बड़ी पवित्र आत्मा की ओर से कैसे हो सकती है, जिसने सिखाया है कि सभा में ''दो या बहुत हो तो तीन जन बारी-बारी से बोलें''? परमेश्वर का पवित्र आत्मा अन्य भाषाएं बोलने के लिए प्रेरणा कैसे दे सकता है, जब आधुनिक कलीसियाएं ''अपनी ही हांकने के लिए'' पवित्र आत्मा की शिक्षा को नज़रअन्दाज़ कर रही हैं? 1 कुरिन्थियों 14:37 में पौलुस ने चेतावनी दी है, ''यदि कोई मनुष्य अपने आप को भविष्यवक्ता या आत्मिक जन समझे, तो यह जान ले, कि जो बातें मैं तुम्हें लिखता हूं, वे प्रभु की आज्ञाएं हैं।'' पौलुस की बातों को नज़रअन्दाज़ करने का अर्थ स्वयं प्रभु यीशु की बातों को नज़रअन्दाज़ करना है। परमेश्वर करे कि हम अपने प्रभु को और सच्चाई के उसके वचन को नज़रअन्दाज़ करने के दोषी न हों?

सारांश

यीशु ने पहली शताब्दी में अपने प्रेरितों को आश्चर्यकर्म के चिह्न दिए, जब उसने उन्हें पवित्र आत्मा में बपतिस्मा दिया। प्रेरितों के हाथ रखने से, आत्मा इन दानों को ''जिसे चाहता, बांट देता'' था (1 कुरिन्थियों 12:11)। जब अन्तिम प्रेरित मर गया, तो वह माध्यम जिसके द्वारा यह दान कलीसिया में दिए जाते थे, समाप्त हो गया। इसका अर्थ यह नहीं है कि पवित्र आत्मा आज हमारे जीवनों में व्यक्तिगत रूप से कार्य नहीं करता, बल्कि यह इस बात की पुष्टि करता है कि वह वैसे ही आश्चर्यकर्म के द्वारा कार्य नहीं करता, जैसे पहली शताब्दी के प्रेरितों और भविष्यवक्ताओं के द्वारा अपना लिखित प्रकाशन दिए जाने और उसकी पुष्टि किए जाने के समय करता था।

कोई पूछ सकता है, ''क्या यीशु मसीह कल, आज और सर्वदा एक जैसा नहीं है?'' (देखें इब्रानियों 13:8।) बिल्कुल है, पर इसका अर्थ यह नहीं है कि वह मनुष्यजाति के हर युग में वैसे ही कार्य करता है। उदाहरण के लिए, आज भी यीशु अपनी इच्छा के अनुसार कुछ भी बनाने में सक्षम है (देखें कुलुस्सियों 1:16), परन्तु सृष्टि की रचना का उसका कार्य पूरा हो चुका है। यह तथ्य कि वह सृष्टि करने की अपनी सामर्थ का इस्तेमाल नहीं करता, यह अर्थ नहीं देता कि अब उसमें ऐसे आश्चर्यकर्म करने की सामर्थ नहीं है। इसका केवल इतना अर्थ है कि ऐसी सामर्थ का इस्तेमाल करने की आज आवश्यकता नहीं है।

जो बात उसकी भौतिक सृष्टि में लागू होती है, वही उसकी आत्मिक सृष्टि अर्थात कलीसिया में भी लागू होती है। यीशु अपनी कलीसिया के लिए केवल एक बार मरा। उसका जी उठना सदा-सदा के लिए एक बार होने वाली घटना थी। परमेश्वर का वचन ''पवित्र लोगों को एक ही बार'' आश्चर्यकर्म से दिया गया और इसकी पुष्टि की गई (यहूदा 3)। पिन्तेकुस्त के दिन कलीसिया का केवल एक ही जन्मदिन था। यीशु आज भी वही है, पर वह हर पीढ़ी में वही काम नहीं करता।

सुसमाचार के संदेश में तीन मुख्य घटनाएं अर्थात यीशु की मृत्यु, गाड़ा जाना और जी उठना हैं (देखें 1 कुरिन्थियों 15:1-4), जो दोबारा कभी दोहराई नहीं जातीं। यीशु एक ही बार पिता के पास ऊपर उठाया गया। उसने अपने ऊपर उठाए जाने के बाद पिन्तेकुस्त के

दिन अपने प्रेरितों को पवित्र आत्मा से बपतिस्मा दिया। उन चुने हुए बारह के द्वारा उसने अपनी वाचा की सच्चाइयां प्रकट कीं, ''चिह्नों और अद्‌भुत कामों और पवित्र आत्मा के वरदानों के बांटने के द्वारा'' (इब्रानियों 2:4) उन अनन्त सच्चाइयों की पुष्टि की। यीशु के लिए उन सच्चाइयों की पुष्टि करते रहना आवश्यक नहीं है, जिन्हें वह एक ही बार पवित्र लोगों के लिए प्रकट कर चुका है। पवित्र आत्मा की ओर से आश्चर्यकर्म के दानों से यह कार्य हुआ। परमेश्वर का आत्मा आज भी मसीही लोगों में अलौकिक रूप से कार्य करता है, पर वह आज वैसे ही कार्य नहीं करता, जैसे परमेश्वर के वचन के प्रकट होने और इसकी पुष्टि होने के समय पहली सदी में करता था। हम अपनी आंखें यीशु मसीह पर लगाएं और अपने प्रभु की महिमा के लिए विश्वास से चलें! (देखें इब्रानियों 12:1-3.)

परमेश्वर हमें आशीष दे कि हम पहली शताब्दी के मसीहियों में उसके काम को और अच्छी तरह से समझ सकें और आज के मसीही लोगों में उसके कार्य को भी!

भाषाओं का उद्देश्य

आइए एक महत्वपूर्ण प्रश्न पूछते हैं: ''पहली बात कि पवित्र आत्मा ने आश्चर्यकर्म के दान क्यों दिए?'' अपने कार्यों के पीछे परमेश्वर का उद्देश्य हमेशा ईश्वरीय ही रहा है तो फिर उसने ऐसे चिह्नों से केवल पहली शताब्दी के लोगों को ही सामर्थ क्यों दी? मरकुस 16:20 इस प्रश्न का उत्तर देता है: ''और उन्होंने (प्रेरितों ने) निकलकर हर जगह प्रचार किया, और प्रभु उनके साथ काम करता रहा, और उन चिह्नों के द्वारा जो साथ-साथ होते थे, वचन को दृढ़ करता रहा।'' यीशु ने अपने प्रेरितों को उनके संदेश की *सच्चाई की पुष्टि करने के लिए* आश्चर्यकर्म के चिह्न दिए। अन्य भाषाओं के दान से उन्हें सारे संसार के लोगों की भाषा में सुसमाचार सुनाने का परमेश्वर की प्रेरणा से ज्ञान मिला। अन्य आश्चर्यकर्म के चिह्नों से अतिरिक्त प्रमाण मिल गया कि प्रभु की सामर्थ और अधिकार उनकी बातों के समर्थन में है।

यह ध्यान देना आवश्यक है कि यीशु ने विश्वासियों के उद्धार की पुष्टि के लिए, वचन को ग्रहण करने वालों को और आत्मिक महसूस कराने के लिए, धार्मिक क्षेत्र के लोगों में भीड़ को चकित करने के लिए, या आत्मिक परिपक्वता या श्रेष्ठता का संकेत देने के लिए चिह्नों और अन्य भाषाओं का इस्तेमाल करने के विषय में कुछ नहीं कहा। ऐसे उद्देश्य तो मनुष्यों के हैं, परमेश्वर के नहीं! चिह्नों से सुसमाचार के संदेश की सचमुच में परमेश्वर की ओर से सच्चाई होने की पुष्टि हुई। आरम्भिक चेलों के पास धार्मिक अधिकार के रूप में सलाह लेने के लिए लिखित नया नियम नहीं था, जिस कारण परमेश्वर ने आश्चर्यकर्म के चिह्नों के द्वारा प्रेरितों के संदेश की पुष्टि की (2 कुरिन्थियों 12:12)।

इब्रानियों की पुस्तक के लेखक ने इस समझ के साथ सहमति जताई। उसने लिखा कि उद्धार के संदेश की ''चर्चा पहले पहल प्रभु के द्वारा हुई और सुनने वालों [प्रेरितों] के द्वारा हमें इसका निश्चय हुआ। और साथ ही परमेश्वर भी अपनी इच्छा के अनुसार चिह्नों, और अद्‌भुत कामों, और नाना प्रकार के सामर्थ के कामों, और पवित्र आत्मा के कामों को बांटने

के द्वारा इसकी गवाही देता रहा'' (इब्रानियों 2:3, 4)। परमेश्वर की प्रेरणा पाए हुए लेखक ने कहा कि *चिह्नों और अद्‌भुत कामों के लिए परमेश्वर का स्पष्ट उद्देश्य अपने वचन की पुष्टि करना था*। यीशु पृथ्वी पर सच्चाई का परमेश्वर का संदेश बताने आया था और यह साबित करने के लिए कि वह पिता की ओर से आया था, असंख्य चिह्न दिखाए गए (यूहन्ना 20:30, 31)। उसके ऊपर उठाए जाने के बाद, प्रेरित सच्चाई का परमेश्वर का संदेश बताते रहे और परमेश्वर आश्चर्यकर्म के चिह्नों के द्वारा उनके संदेश की वैधता की गवाही देता रहा। आज हमें नये नियम पर ''परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया'' होने का भरोसा रखना आवश्यक है जो ''उपदेश, और समझाने और सुधारने और धर्म की शिक्षा के लिए लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने और हर एक भले काम के लिए तत्पर हो जाए'' (2 तीमुथियुस 3:16, 17)। विश्वास की चुनौती कि ''प्रभु की आज्ञाएं'' (1 कुरिन्थियों 14:37) मानकर पवित्र शास्त्र के अधिकार में पूरा भरोसा रखें।

बहुत से लोग जो आज अन्य भाषा बोलने का दावा करते हैं, वे पवित्र आत्मा का बपतिस्मा पाए होने का भी दावा करते हैं। वे इस बात को नहीं समझ पाते कि यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले ने प्रतिज्ञा की थी कि यीशु पवित्र आत्मा[1] और आग से बपतिस्मा देगा (मत्ती 3:11) जबकि उन्होंने केवल विश्वास से इस प्रतिज्ञा का दावा किया है। पवित्र आत्मा का बपतिस्मा केवल मूल बारह प्रेरितों को दी गई प्रतिज्ञा थी।

इफिसियों के नाम अपनी पत्री में पौलुस ने लिखा है, ''एक ही बपतिस्मा है'' (4:4, 5)। यह ''एक ही बपतिस्मा'' पानी का बपतिस्मा ही है जिसकी आज्ञा पहले यीशु ने अपने ग्रेट कमीशन में दी थी। मसीह में विश्वास में (मरकुस 16:16) उन लोगों के साथ, जिन्होंने ''मन से आज्ञा मानी'' (रोमियों 6:17), पानी का बपतिस्मा हमें पाप से छुड़ाकर पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा की नई संगति में ले आता है (मत्ती 28:19)।

टिप्पणियां

[1]पवित्र आत्मा के बपतिस्मे के सम्पूर्ण विवरण के लिए, ''प्रेरितों 1-8 में आत्मा का दिया जाना'' पाठ देखें।